

भारत सरकार
विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय
विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग
राज्य सभा
अतारांकित प्रश्न संख्या 4454
02.04.2026 को उत्तर देने के लिए

इंस्पायर योजना का कवरेज

4454 श्री रायगा कृष्णैया:

श्री अशोकराव शंकरराव चव्हाण:

क्या विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

- (क) गत तीन वर्षों के दौरान प्रेरित अनुसंधान के लिए विज्ञान में नवाचार (इंस्पायर) योजना के विभिन्न घटकों के अंतर्गत कितने छात्रों को सहायता प्रदान की गई है;
- (ख) क्या मंत्रालय ने इंस्पायर-मानक जैसी पहलों के माध्यम से विद्यालयी छात्रों के बीच नवाचार और अनुसंधान को प्रोत्साहित करने के लिए योजना का विस्तार किया है और यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है;
- (ग) अब तक इस योजना के अंतर्गत कितने विद्यालय और जिले शामिल किए गए हैं, और
- (घ) वैज्ञानिक अनुसंधान कार्यक्रमों में ग्रामीण क्षेत्रों तथा अल्प-प्रतिनिधित्व वाले समूहों के छात्रों की भागीदारी बढ़ाने के लिए मंत्रालय द्वारा क्या कदम उठाए गए हैं?

उत्तर

विज्ञान और प्रौद्योगिकी तथा पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय के राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार)

(डॉ. जितेंद्र सिंह)

(क) अभिप्रेरित अनुसंधान के लिए विज्ञान की खोज में नवाचार (इंस्पायर) योजना विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग (डीएसटी), भारत सरकार की एक राष्ट्रीय पहल है, जिसका उद्देश्य प्रतिभाशाली युवाओं को मूलभूत और प्राकृतिक विज्ञानों का अध्ययन करने तथा इंजीनियरिंग, चिकित्सा, कृषि और पशु चिकित्सा विज्ञान जैसे क्षेत्रों में अनुसंधान करियर अपनाने के लिए आकर्षित करना है, जिससे देश के अनुसंधान और विकास आधार को सुदृढ़ किया जा सके। यह योजना विभिन्न शैक्षिक चरणों में कई घटकों के माध्यम से संचालित होती है। इंस्पायर-मानक (मिलियन माइंड्स ऑर्गमेंटिंग नेशनल एस्पिरेशन एंड नॉलेज) कक्षा VI-XII में अध्ययनरत 10-17 वर्ष की आयु के छात्रों को लक्षित करती है, जिसमें नवीन विचारों और वैज्ञानिक जिज्ञासा को प्रोत्साहित किया जाता है; स्कूल ई-एमआईएस पोर्टल के माध्यम से प्रतिवर्ष अधिकतम पाँच छात्रों को नामित कर सकते हैं, और चयनित छात्रों को उनके प्रोजेक्ट्स को विकसित करने तथा जिला, राज्य, और राष्ट्रीय प्रदर्शनियों में प्रस्तुत करने के लिए प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण के माध्यम से 10,000 रुपये प्राप्त होते हैं। उच्चतर शिक्षा के लिए छात्रवृत्ति (शी) 17-22 वर्ष की आयु के प्रतिभाशाली छात्रों को प्रति वर्ष 80,000 रुपये की 12,000 छात्रवृत्तियां प्रदान करके मूलभूत और प्राकृतिक विज्ञान में स्नातक और स्नातकोत्तर डिग्री प्राप्त करने के साथ-साथ मार्गदर्शन के अवसर भी प्रदान करती है। अनुसंधान स्तर पर, इंस्पायर अध्येतावृत्ति मेधावी छात्रों को पीएचडी कार्यक्रमों के लिए अधिकतम पाँच वर्षों तक सीएसआईआर-यूजीसी नेट के समकक्ष अध्येतावृत्तियों (जेआरएफ के रूप में 37,000 रुपये और एसआरएफ के रूप में 42,000 रुपये प्रति माह तथा एचआरए और 20,000 रुपये प्रति वर्ष का आकस्मिक अनुदान) के साथ सहायता प्रदान करती है। इसके अतिरिक्त, इंस्पायर संकाय अध्येतावृत्ति 27-32 वर्ष की आयु के प्रारंभिक करियर वाले पोस्ट-डॉक्टरल शोधकर्ताओं को मूलभूत और अनुप्रयुक्त विज्ञानों में स्वतंत्र अनुसंधान करियर बनाने के लिए 1,25,000 रुपये प्रति माह, वार्षिक वेतन वृद्धि और 35 लाख रुपये के अनुसंधान अनुदान के साथ पांच वर्षीय अध्येतावृत्ति प्रदान करती है। समग्र रूप से, ये घटक स्कूली स्तर से लेकर उन्नत अनुसंधान तक वैज्ञानिक प्रतिभा तैयार करने के लिए एक सतत श्रृंखला का सृजन करते हैं। विगत तीन वर्षों के दौरान इंस्पायर योजना के विभिन्न घटकों के अंतर्गत सहायता प्राप्त विद्यार्थियों की संख्या का विवरण निम्नानुसार है:

इंस्पायर घटक	सहायता प्राप्त छात्रों की संख्या		
	वर्ष 2023-24	2024-25	वर्ष 2025-26
इंस्पायर-मानक	46926	50009	49805
इंस्पायर (शी)	7976	9494	9046
इंस्पायर अध्येतावृत्ति	796	305	923
इंस्पायर संकाय अध्येतावृत्ति	100	58	171

(ख) मंत्रालय ने इंस्पायर-मानक जैसी पहलों के माध्यम से स्कूली छात्रों के बीच नवाचार और अनुसंधान को बढ़ावा देने के अपने प्रयासों का विस्तार किया है। यह कार्यक्रम कक्षा 6 से 12 तक के छात्रों को लक्षित करता है और उन्हें मौलिक और रचनात्मक विचार प्रस्तुत करने के लिए प्रोत्साहित करता है। चयनित छात्रों को अपने विचारों के प्रोटोटाइप विकसित करने के लिए 10,000 रुपये की वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है। इस योजना का विस्तार देश भर के अधिक से अधिक विद्यालयों को शामिल करने के लिए किया गया है, जिसमें ग्रामीण और सरकारी संस्थानों पर विशेष ध्यान दिया गया है ताकि व्यापक स्तर पर इसकी पहुंच सुनिश्चित हो सके। यह एक सुव्यवस्थित मंच प्रदान करता है जहाँ छात्र जिला, राज्य और राष्ट्रीय स्तरों पर अपने विचारों को प्रदर्शित कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त, छात्रों में वैज्ञानिक सोच, रचनात्मकता और समस्या-समाधान क्षमताओं को विकसित करने में सहायता के लिए पूरी प्रक्रिया के दौरान मार्गदर्शन सहायता भी प्रदान की जाती है।

(ग) इस योजना के अंतर्गत देश भर में शामिल विद्यालयों और जिलों की संख्या का विवरण, जिलावार आंकड़ों सहित, नीचे दिया गया है:

वित्तीय वर्ष	भाग लेने वाले छात्रों की संख्या	भाग लेने वाले विद्यालयों की संख्या	शामिल किए गए जिलों की संख्या
2023-24	854553	224283	719
2024-25	1013229	253459	723
2025-26	1147343	274528	729

(घ) मंत्रालय ने इंस्पायर-मानक जैसे वैज्ञानिक अनुसंधान कार्यक्रमों में ग्रामीण क्षेत्रों और अल्प प्रतिनिधित्व वाले समूहों के छात्रों की भागीदारी बढ़ाने के लिए कई लक्षित उपाय लागू किए हैं। जागरूकता बढ़ाने के लिए, राज्य और जिला नोडल अधिकारियों के साथ नियमित रूप से जागरूकता बैठकें आयोजित की जाती हैं, साथ ही स्कूलों को जागरूक करने और उन्हें भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करने हेतु शिक्षक प्रशिक्षण कार्यशालाएं भी आयोजित की जाती हैं। विशेषकर दूरदराज के क्षेत्रों में अधिक से अधिक लोगों तक पहुंचने के लिए वीडियो, पोस्टर, सोशल मीडिया और ईमेल संचार का उपयोग करते हुए एक व्यापक मल्टीमीडिया अभियान भी शुरू किया गया है। इन प्रयासों के परिणामस्वरूप भागीदारी में लगातार वृद्धि हुई है, जिसमें ग्रामीण क्षेत्रों में उल्लेखनीय बढ़ोतरी देखी गई है। जागरूकता अभियान के अलावा, मंत्रालय ने चयनित छात्रों के लिए सहायता तंत्रों को भी मजबूत किया है। चयनित प्रत्येक छात्र को अपने विचार का प्रोटोटाइप विकसित करने के लिए 10,000 रुपये मिलते हैं। उन्हें अटल टिकरिंग लैब्स (एटीएल) के माध्यम से मार्गदर्शन और तकनीकी सहायता भी प्रदान की जाती है। छात्रों की प्रगति को जिला, राज्य और राष्ट्रीय स्तर की संरचित प्रतियोगिताओं के माध्यम से सुनिश्चित करना, जिससे उनकी निरंतर सहभागिता और अनुभव बढ़ता रहे। इसके अलावा, उन्नत चरणों पर चयनित छात्रों के लिए आईआईटी और एनआईटी जैसे प्रमुख संस्थानों के सहयोग से मार्गदर्शन कार्यशालाओं का आयोजन किया जाता है। राज्य स्तरीय विजेताओं को राष्ट्रीय स्तर पर प्रस्तुति के लिए अपने प्रोटोटाइप को परिष्कृत करने हेतु वित्तीय सहायता प्राप्त होती है। राष्ट्रीय स्तर पर, छात्रों को पेटेंट दाखिल करने में सहायता और तकनीकी मार्गदर्शन सहित इनक्यूबेशन सुविधाओं के माध्यम से सहायता दी जाती है, जिससे वे अपने विचारों को बड़े पैमाने पर लागू करने योग्य और सामाजिक रूप से प्रासंगिक नवाचारों में परिवर्तित कर सकें।
